class 9th hindi notes chapter 3 पद

पद

लेखक – गुरु गोविन्द सिंह

कवि – परिचय

गुरु गोविन्द सिंह का जन्म बिहार की राजधानी पटना में सन् 1666 ई . में हुआ था । पटना में ही माता गुजरी देवी ने उन्हें गुरुमुखी सिखाईं । इनका मूलनाम गोविंद राय था । 1699 ई . में आनंदपुर के केशवगढ़ नामक स्थान पर दयाराम , धर्मदास , मुहमचंद , साहिबचंद , हिम्मत इन पाँच सिखों को मृत्युंजयी बनाकर ' सिंह ' बनाया और गोविंद राय से गोविंद सिंह बने ।
गुरु गोविन्द सिंह सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु थे । उनकी प्रतिभा शस्त्र से लेकर शास्त्र तक दिखलाई पड़ती है । वे औरंगजेब के समकालीन थे । औरंगजेब की कट्टर धार्मिकतावाद का उन्होंने पुरजोर विरोध किया । शक्ति संघटन के लिए हिमालय की शरण ली और वहीं पहाड़ियों में अपना निवास स्थान बनाया तथा 20 वर्ष तक ऐकान्तिक साधना की । इस एकान्तिक साधना के अनेक शुभ परिणाम निकले । उन्होंने फारसी और संस्कृत के ऐतिहासिक – पौराणिक ग्रन्थों का विशद अध्ययन कर लिया । हिन्दी कवियों द्वारा उन्होंने पंजाब में पहली बार वीर रस के काव्य का प्रणयन कराया और स्वयं काव्य की रचना की । काल के हिसाब से वे रीतिकाल के कवि ठहरते हैं । घुड़सवारी ; तीरंदाजी में असाधारण निपुणता प्राप्त की । आखेट विद्या में दक्षता प्राप्त की और कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास किया । अनंगपाल के पश्चात् गुरु गोविंद सिंह के समान कोई भी राजनीतिक नेता नहीं हुआ । गुरु गोविन्द सिंह ने भलीभांति समझ लिया कि हिन्दुओं में धर्म तो है किन्तु राजनीतिक जागरूकता और चेतना नहीं है और राष्ट्रीय एकीकरण में तत्कालीन जाति – व्यवस्था अधिक बाधक है ।
गुरु गोविन्द सिंह द्वारा ' खालसा पन्थ ' का निर्माण उनके जीवन की सर्वोपरि सफलता है । गुरु गोविन्द सिंहजी की वाणी में शान्त एवं वीर रस की प्रधानता है । परमात्मा की स्तुति में भक्ति ; ज्ञान और वैराग्य की मन्दाकिनी प्रवाहित हुई है । युद्धों के वर्णन में वीर रस प्रधान है । रौद्र और वीर रस उसके अंगीभूत हैं । इसमें यों तो सभी अलंकारों के उदाहरण मिल सकते हैं किन्तु उपमा , रूपक और दृष्टान्त का बाहुल्य है । गुरु गोविन्द सिंहजी की भाषा प्रधानतया व्रजभाषा है किन्तु बीच – बीच में अरबी – फारसी और संस्कृत शब्दों की भी प्रचुरता है । उनकी भाषा में सरिता का प्रवाह एवं निर्झर का कलकल निनाद है । उनकी समस्त वाणी परमात्मा की भक्ति तथा देशभक्ति की अलौकिक वर्णन में व्यक्त हुई है ।

कविता का सारांश

पद -1

गुरु गोविन्द सिंह ने अपने प्रथम – छंद के माध्यम से महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किया है । समाज के विभिन्न मतों के मानने वालों का वर्णन किया है । समाज में कोई मुंडिया संन्यासी है । कोई योगी है , ब्रह्मचारी है और कोई जात – पात को मानने वाला है । हिन्दू , मुसलमान , ईसाई और अन्य वर्ग के लोग हैं , परन्तु मानव की जाति सब एक है । वे कहते हैं कि जो काम करीम का है वही राजीक का और रहीम का है । दूसरा भेद – भाव कोई नहीं है । मनुष्यों को सारे भ्रमों को भुलाने का संदेश रचनाकार ने दिया है । महत्वपूर्ण बात यह कही है कि सेवा एक ही प्रकार की

https://www.evidyarthi.in/

करनी चाहिए । सबके गुरु एक हैं । एक ही प्रकाश है और एक ही स्वरूप है । कवि ने प्रकारान्तर -से एकात्मकता का वर्णन किया है । एकेश्वरवादी मतों को अभिव्यक्त कर सामाजिक , मानवीय और राष्ट्रीय एकता की स्थापना पर भी बल प्रदान किया है । अध्यात्मवादी विचार अनूठे हैं । प्रथम पद में अनुप्रास , रूपक एवं अन्य अलंकारों की छटा है ।

पद -2

कवि गुरु गोविन्द सिंह ने अपने दूसरे पद के सहारे आध्यात्मिक तथ्य को काव्यात्मक सौन्दर्य प्रदान किया है । उनका कहना है कि एक आग के कण के सम्पर्क से विशाल आग की लपट उत्पन्न होती हैं । वस्तुओं को भस्म करती हैं । नाम अलग हो परन्तु जल कर अन्ततः उसी आग में मिलते हैं । एक धूल से अनेक धूलें बनती हैं और सारी वस्तुएँ धूल मिश्रित हो जाती हैं । कवि ने व्यावहारिक तर्क प्रदान किया है । उनका कहना है कि जलाशय इत्यादि में जल की तरंगें उठती है तो किनारे तक पहुंच कर अपना रूप समाप्त करती हैं । एक मरती है तो दूसरी जीवित होती है । विश्व में रूप एवं आकार विभिन्न हैं । अभूत ही भूत है और भूत ही अभूत है । आत्मा ही परमात्मा है और परमात्मा ही आत्मा है । कवि ने एक दार्शनिक तथ्य का स्पष्टीकरण देने का अनोखा कार्य किया है । मिट्टी जन्मदायिनी है । पुनः सारी चीजें मिट्टी में मिल जाती हैं यह पद दार्शनिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

कविता का भावार्थ

1. प्रथम पद में गुरु गोविंद सिंह कहते हैं कि कोई आदमी संन्यासी हो गया , कोई जोगी हुआ , कोई ब्रह्मचारी , कोई यति (योगी) को मानता देखकर भाग जाता है , कोई इमाम अर्थात् इस्लाम धर्म का पुरोहित बन जाता है , कोई शुद्ध करने । हिंदू , तुर्क , कोई जो अपने स्वामी को पीड़ित वाला । सभी मनुष्य की ही जाति है । सभी को एक ही जानता हैं । जो कृपा करनेवाला भगवान है वही राज करनेवाला , वही दया करने वाला है ।वह किसी एक – दूसरे में भेद नहीं करता है । एक ही सेवा करने योग्य है , वह गुरुदेव है । मैं उसे एक स्वरूप में जानता हूँ जिसकी ज्योति जलाई जा सके ।
2. जैसे एक कण चिंगारी से करोड़ों आग जल उठता है , वह निराला है , फिर वह उसी आग में मिल जाता है । जैसे एक धूल अनेक धूल का निर्माण करते हैं वैसे ही धूल के कण फिर उसी धूल में समा जाते हैं । जिस प्रकार एक नदी में करोड़ों तरंग उपजते हैं और फिर वही पानी के तरंग उसी पानी के कहे जाते हैं । वैसे ईश्वर जो भूत नहीं है वह प्रगट होकर जिससे उपजता है उसी में समा जाता है ।

https://www.evidyarthi.in/